आर्थिक प्रावैगिकी

(ECONOMIC DYNAMICS)

परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक सिद्धान्तों की विवेचना में प्रमुख रूप से स्थैतिक विश्लेषण का प्रयोग किया है परन्तु मार्शल ने मूल्य सिद्धान्त की विवेचना समय-तत्व के आधार पर करके प्रावैगिकी विश्लेषण को अपनाया है। प्रावैगिकी विश्लेषण, एक वास्तविक विश्लेषण विधि है क्योंकि इसमें आर्थिक अध्ययन समय-बिन्दु तक सीमित न रहकर विभिन्न समयावधियों के बीच होने वाले वास्तविक परिवर्तन का विश्लेषण करता है। यह परिवर्तन की प्रक्रिया (process of change) का अध्ययन है, जो समय के दौरान होते हैं अर्थात् यह एक परिवर्तन-प्रक्रिया का सतत् अध्ययन है। इस अध्ययन में किसी भी ऐसी मान्यता 'अन्य बातें समान रहें' (*Ceteris Paribus*) की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

वास्तव में, समय के दौरान एक अर्थव्यवस्था में दो तरह के परिवर्तन हो सकते हैं—प्रथम, अर्थव्यवस्था के ढाँचे (pattern) को बगैर बदले उसमें परिवर्तन हों और दूसरे अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ उसके ढाँचे में भी परिवर्तन हों। आर्थिक प्रावैगिकी का अभिप्राय दूसरे प्रकार की अर्थव्यवस्था से ही है अर्थात् जब जनसंख्या आकार, पूँजी भण्डार, उत्पादन विधि, व्यापार संगठन का स्वरूप और जनता की रुचियों, इनमें से किसी एक या सभी में एक साथ परिवर्तन हों तो परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के ढाँचे तथा दिशा (pattern and direction) दोनों में परिवर्तन होगा। इस तथ्य को आगे दिये गये चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है—

---

1. "Statics is much more important than dynamics, partly because it is the ultimate destination that counts in most human affairs, and partly because the ultimate equilibrium strongly influences the time paths that are taken to reach it, whereas the reverse influene is much weaker."
—Robert Dorfman, *Prices and Markets*

Scanned with CamScanner

संलग्न चित्र में, अर्थव्यवस्था की सामान्य गति के अनुसार सन्तुलन बिन्दु A से B की ओर अग्रसर होगा लेकिन यकायक A पर आर्थिक चर-राशियाँ बदल जाने के कारण, अर्थव्यवस्था की गति C की ओर हो जाती है। पुनः सामान्य गति के अनुसार इसे C से D की ओर अग्रसर होना चाहिए लेकिन C पर फिर परिवर्तन हो जाने के कारण अर्थव्यवस्था की दिशा E की ओर हो जाती है। इस प्रकार आर्थिक प्रावैगिकी उस परिवर्तन मार्ग का अध्ययन करती है जिस पर होकर सन्तुलन एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर पहुँचता है अर्थात् किस प्रकार अर्थव्यवस्था की दिशा A से C और C से E के लिए बदलती है।

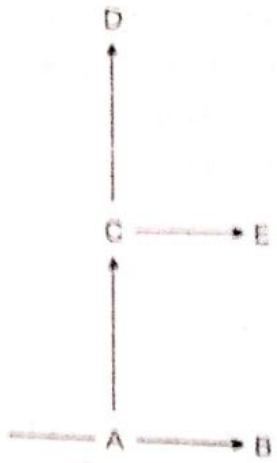

चित्र 1

आर्थिक प्रावैगिकी की प्रमुख परिभाषाएँ (Main Definitions)

आर्थिक प्रावैगिकी की परिभाषाओं में प्रमुख हैं—

1. प्रो. जे. आर. हिक्स के अनुसार, "**मैं आर्थिक सिद्धान्त के उन भागों को स्थैतिकी कहता हूँ जिनमें हमको तिथिकरण के लिए परेशान नहीं होना पड़ता। आर्थिक प्रावैगिकी वह भाग कहलाते हैं जहाँ प्रत्येक मात्रा का तिथिकरण आवश्यक है।**"[1]

प्रो. हिक्स की इस परिभाषा को अधिक सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता क्योंकि विश्लेषण को प्रावैगिक बनाने के लिए केवल मात्राओं का तिथिकरण पर्याप्त नहीं है।

2. प्रो. बॉमोल के अनुसार, "**पिछली और भावी महत्वपूर्ण घटनाओं से सम्बन्धित आर्थिक विषयों का अध्ययन आर्थिक प्रावैगिकी है।**"[2]

3. प्रो. स्टिगलर के अनुसार, "**आर्थिक प्रावैगिकी उस मार्ग का अध्ययन है जिसके द्वारा आर्थिक मात्राएँ सन्तुलन की अवस्था में पहुँचती हैं।**"[3]

4. प्रो. क्लार्क ने आर्थिक प्रावैगिकी की निम्नलिखित पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है—

(i) जनसंख्या बढ़ती है।

(ii) पूँजी स्टॉक में वृद्धि होती है।

(iii) उत्पादन तकनीकी में सुधार एवं विस्तार होता है।

(iv) औद्योगिक संस्थानों के रूप भी बदल जाते हैं अर्थात् अकुशल संगठन का स्थान कुशल संगठन ग्रहण करते हैं।

(v) उपभोक्ता की आवश्यकताओं में वृद्धि होती है।

आर्थिक प्रावैगिकी की परिसीमाएँ
(LIMITATIONS OF ECONOMIC DYNAMICS)

इसमें सन्देह नहीं कि आर्थिक प्रावैगिकी एक व्यापक, यथार्थ एवं सृजनात्मक विधि है लेकिन व्यावहारिक जीवन में इसके प्रयोग की अनेक सीमाएँ हैं, जो निम्नानुसार हैं—

(1) **जटिल विधि**—आर्थिक प्रावैगिकी आर्थिक अनुसन्धान की एक कठिन तथा जटिल विधि है। 'अन्य बातें यथास्थिर रहें' (*Ceteris Paribus*) जैसी इसमें कोई मान्यता नहीं होती है तथा इसमें समय-तत्व (time element) की ओर पूरा ध्यान दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप समस्त आर्थिक प्रक्रिया में अनुक्रमों

1. "I call economic statics those parts of economic theory where we do not trouble about dating; Economic Dynamic those parts where every quantity must be dated."
—*J. R. Hicks, Value and Capital*

2. "Economic Dynamics is the study of economic phenomena in relation to preceding and succeeding events."
—*Baumol*

3. "Economics is the study of the path by which a set of economic quantities (price and quantities) reach equilibrium."
—*Stigler*

Scanned with CamScanner

आर्थिक प्रावैगिकी का महत्व

(SIGNIFICANCE OF ECONOMIC DYNAMICS)

स्थैतिकी के साथ-साथ, प्रावैगिक विश्लेषण का महत्व सदैव रहा है। दोनों ही प्रकार के आर्थिक अध्ययन—सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक—में यह समान रूप से महत्वपूर्ण है।

(1) **प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र**—अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित सम्प्रदाय के कई महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रावैगिक विश्लेषण पर आधारित हैं। रिकार्डो का वितरण का सिद्धान्त, माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त तथा मार्शल द्वारा प्रतिपादित अल्प तथा दीर्घकालीन मूल्य प्रावैगिक विश्लेषण के सुन्दर उदाहरण हैं।

(2) **वास्तविकता पर आधारित**—इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह कल्पना पर नहीं बल्कि वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है। इसके द्वारा निरन्तर बदलती हुई आर्थिक घटनाओं के कारणों तथा परिणामों का विश्लेषण किया जाता है, ताकि अर्थव्यवस्था का एक चल स्वरूप अर्थात् किस प्रकार अर्थव्यवस्था समय के पिछले बिन्दु से अगले बिन्दु में विकसित होती है, हमारे सामने उपस्थित होता है।

(3) **सन्तुलन के स्थायित्व का अध्ययन**—इसमें सन्तुलन बिन्दु का नहीं बल्कि परिवर्तनशील सन्तुलन का अध्ययन किया जाता है। प्रावैगिकी असन्तुलन की स्थिति में अर्थव्यवस्था के व्यवहार का अध्ययन करती है और उन तत्वों के मार्ग का पता लगाती है जो नया साम्य स्थापित करते हैं। अत: सन्तुलन के स्थायित्व की प्रमुख समस्या का सम्बन्ध प्रावैगिकी विश्लेषण से है।

(4) **व्यापार चक्र सिद्धान्त**—व्यापार चक्र सिद्धान्तों की विवेचना में प्रावैगिकी ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। अर्थव्यवस्था में चक्रीय उच्चावचन, परिकल्पना तथा सुदीर्घकालीन विकास की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्रावैगिक विश्लेषण द्वारा ही होता है, चूँकि इनके विश्लेषण में समय-तत्व का मिश्रण होता है। प्रावैगिकी में व्यापार चक्रों की विवेचना हेतु नये सिद्धान्तों जैसे—समय-विलम्बना (time-lag), त्वरक (accelerator) इत्यादि का प्रतिपादन किया गया है।

(5) **कीन्स का सामान्य सिद्धान्त**—कीन्स का सामान्य सिद्धान्त समस्त प्रावैगिक विश्लेषण का ही अंग है जिसमें समय के दौरान राष्ट्रीय आय के निर्धारण का अध्ययन किया गया है। बचत तथा विनियोग की प्रेरणा राष्ट्रीय आय के दो निर्धारक तत्व हैं तथा जो स्वयं राष्ट्रीय आय पर भी निर्भर करते हैं। राष्ट्रीय आय के सन्दर्भ में उनका व्यवहार जो समय-तत्व पर आधारित होता है, प्रावैगिक प्रकृति का होता है।

Scanned with CamScanner

(6) आर्थिक विकास की समस्या—ऐसी आर्थिक समस्याओं का अध्ययन जिनमें समय-विलम्बना (time-lags), विकास की दर तथा क्रमिक विश्लेषण इत्यादि होते हैं, प्रावैगिक सम्बन्धों के आधार पर किया जाता है। प्रावैगिक विश्लेषण का महत्व आर्थिक विकास की प्रक्रिया के अध्ययन में है।

(7) आर्थिक विश्लेषण की नयी तकनीकियों का विकास—हाल के वर्षों में व्यापक प्रावैगिकी (Macro Dynamics) विधि का बड़े पैमाने पर विकास किया गया है, विशेषकर सामूहिक चरों में परिवर्तन की दरों का अध्ययन करने के लिए। इस दिशा में प्रमुख रूप से फ्रिश, कालेकी, टिनबर्जन, रॉबर्टसन, हैरड, मैकलप लिंडाल, सैम्युअलसन, हिक्स इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रीय आय, व्यापार चक्र, आर्थिक विकास के सिद्धान्तों की विवेचना में अर्थमिति (Econometrics) पर आधारित मॉडलों का निर्माण किया जा रहा है जिनकी आधारशिला व्यापक प्रावैगिक विश्लेषण है। परिणामस्वरूप अर्थशास्त्र को एक अधिक वैज्ञानिक परिवेश उपलब्ध हुआ है। प्रो. सैम्युअलसन के शब्दों में, "प्रावैगिक विश्लेषण विभिन्न परिकल्पनाओं के उपकरणों को निश्चित करने तथा नयी सम्भावनाओं के अनुसन्धान के लिए, एक व्यापक रूप से लोचपूर्ण विचारधारा है।"

आर्थिक स्थैतिकी एवं आर्थिक प्रावैगिकी : तुलनात्मक अध्ययन

(ECONOMIC STATICS AND DYNAMICS : COMPARATIVE STUDY)

आर्थिक स्थैतिकी	आर्थिक प्रावैगिकी
1. चर-मूल्यों (Variables) के बीच जो सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, वह एक ही समय से सम्बन्धित होता है।	1. चर-मूल्यों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, वह विभिन्न समयावधियों से सम्बन्धित है।
2. अन्य सभी तत्वों को स्थिर मानकर एक निश्चित बिन्दु का अध्ययन किया जाता है।	2. सभी तत्वों के परिवर्तन का एक साथ अध्ययन किया जाता है।
3. सन्तुलन की एक स्थिति-विशेष का अध्ययन किया जाता है।	3. सन्तुलन की प्रारम्भिक स्थिति से अन्तिम स्थिति का एक सतत प्रक्रिया (continuous process) के रूप में अध्ययन किया जाता है।
4. तिथिकरण की समस्या को कोई महत्व नहीं दिया जाता। **(हिक्स)**	4. तिथिकरण महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। **(हिक्स)**
5. जनसंख्या, पूँजी, उत्पादन तकनीक, व्यवसायिक संगठन, उपभोक्ता की आवश्यकताएँ स्थिर रहते हैं। **(क्लार्क)**	5. ये सभी घटक परिवर्तनशील होते हैं। **(क्लार्क)**
6. परिवर्तन नियमित एवं स्थिर गति से होते हैं।	6. परिवर्तन नियमित व स्थिर गति से न होकर विभिन्न रूपों में उपस्थित होते हैं।
7. इस विश्लेषण का सम्बन्ध केवल वर्तमान से है। **(बॉमोल)**	7. इस विश्लेषण का सम्बन्ध भूत एवं भविष्य दोनों से है। **(बॉमोल)**
8. यह प्रावैगिक विश्लेषण की स्थापना (Thesis) है।	8. यह आर्थिक स्थैतिकी का एक प्रतिपक्ष (Anti-thesis) है।
9. स्थैतिक बिन्दुओं द्वारा ही प्रावैगिक विश्लेषण का निर्माण होता है।	9. सम्पूर्ण स्थैतिक अनुसन्धानों की व्याख्या इस अध्ययन द्वारा की जाती है।
10. यह अध्ययन अर्थव्यवस्था की एक स्थिर तस्वीर प्रस्तुत करता है।	10. इस अध्ययन में अर्थव्यवस्था की स्थिति एक चलचित्र के समान प्रस्तुत की जाती है।

Scanned with CamScanner